'योग' याद की यात्रा है

ज्ञान के सम्बंध में परमात्मा ने अलग-अलग प्रकार से हमें बताया है। जैसे कभी बाबा ने कहा है, ज्ञान रोशनी है, जैसे रोशनी में हम चीज़ों को ठीक तरह से देख सकते हैं, वैसे ही ज्ञान होने से हम इस विश्व को, शरीर में विराजमान आत्मा को, कर्मों के सिद्धांत को अच्छी तरह जान सकते हैं। तीसरा नेत्र खुल जाता है, इसलिए ज्ञान को तीसरा नेत्र भी कहा जाता है। यह ज्ञान औषधि भी है, आत्मा को जो विकारों के रोग लगे हुए हैं, वो समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार अलग-अलग समय बाबा ने ज्ञान की अलग-अलग परिभाषा दी है। इन सभी को ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी है। इसलिए बाबा कहते हैं, ज्ञान के हरेक प्वाइंट अनमोल रत्न हैं, अविनाशी रत्न हैं। इस बात को याद रखने से हम कोई प्वाइंट मिस नहीं करेंगे। क्योंकि वो मूल्यवान चीज़ है। केवल रत्न ही नहीं हैं बल्कि वो अपने भविष्य का जीवन है। उससे हमें अनेक जन्मों तक सुख, शांति, पवित्रता और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

इसी तरह बाबा ने कहा है कि याद एक यात्रा है। आमतौर पर बाबा कहते हैं कि 'योग' शब्द कठिन है। अब आप योग शब्द कहते हैं तो लोग समझते हैं कि यह कठिन है। भगवान से योग लगाना, यह तो बड़ा कठिन काम है। इसी संदर्भ में आपको 'टेढ़ी खीर' की कहानी का ज़िक्र करना उचित होगा। किसी व्यक्ति का एक दोस्त था। वो जन्म से अंधा था। बहुत दिनों के बाद एक दफा आपस में मिले तो उसने दोस्त को कहा कि मेरे पास आना। अंधे दोस्त ने कहा, क्या करोगे? दूसरे ने कहा, तुम्हारी खातिरी करूंगा, महफिल करूंगा, खिलाऊंगा, पिलाऊंगा। उसने कहा, अच्छा क्या खिलाओगे बताओ? उसने कहा, खीर खिलाऊंगा। अंधे दोस्त ने पूछा, खीर क्या होती है? उसने कहा, सफेद होती है। जन्म से अंधा होने के कारण उस बिचारे को क्या पता कि सफेद क्या होता है। उसने पूछा, सफेद कैसी होती है? उसने कहा, जैसे बत्तख होती है। और ज़्यादा कठिन कर दिया उसके लिए। उस बिचारे को बत्तख क्या होती है वह भी पता नहीं था। फिर उसने प्रश्न पूछा, बत्तख कैसी होती है? दोस्त ने उसका हाथ पकड़कर उसको टेढ़ा मोड़कर दूसरा हाथ उसपर रखा और कहा कि बत्तख ऐसी होती है। फिर उसने कहा, ना भाई, मैं ऐसी टेढ़ी खीर नहीं खाऊंगा, वो तो मेरे गले में ही फंस जायेगी।

बाबा कहते हैं, योग शब्द जब आप कहते हो तो लोग इसे कठिन समझते हैं। कहते हैं, यह तो हमारे वश का नहीं है। जब उसको 'याद' कहते हैं, तो सरल समझते हैं क्योंकि याद तो स्वाभाविक है। बच्चा भी अपनी माँ को याद करता है। उसको कोई सिखाता है क्या? माँ को याद करना उसके लिए सहज और स्वाभाविक होता है। अगर हमें मालूम हो कि शिव बाबा से हमारा क्या सम्बंध है, उससे क्या प्राप्ति होती है, और परमात्मा की याद के क्या लाभ हैं, तो 'याद' सहज है। इस ज्ञान में अधिक लोग भक्ति मार्ग के आते हैं। जो ज्ञान में आते हैं तो भक्ति का अंत होता है, क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। भक्ति का फल है ही ज्ञान।

भक्त लोग तो यात्रा में लगे रहते हैं कि इस बार हरिद्वार चलेंगे, अगली बार फलानी जगह जायेंगे। इन बातों को ध्यान में रखते हुए बाबा ने कहा है कि 'योग एक यात्रा' है। बहुत सरल बना दिया। क्योंकि यात्रा में भक्तों की रुचि होती है। वे समझते हैं कि यात्रा करने से पाप समाप्त होते हैं। वहां महान लोगों के दर्शन होते हैं। जहाँ पर महान व्यक्ति होते हैं, वो पवित्र स्थान होता है। वहां पर जाने से हमें भी अच्छे संकल्प आयेंगे। जीवन अच्छा बनेगा।

किसी को योग सिखाना है तो उस व्यक्ति को प्रेरित करना पड़ता है। जिस चीज़ में जिसकी रुचि हो, उसको वो बात बतानी पड़ती है ताकि वो उसमें दिलचस्पी ले। ज्ञान की प्राप्ति के लिए जिज्ञासा ज़रूरी है। जिसको भूख ही नहीं लगी हो, वो खायेगा कैसे! प्यास ही नहीं लगी हो तो पानी कैसे पियेगा! पहले व्यक्ति को जाग्रत करना पड़ता है। जिसको भूख ही नहीं लगी हो, उसको खिलाना तो है ही ताकि उसको कमज़ोरी न आये। इसलिए पहले उसको ऐसी दवाई देते हैं कि उसकी भूख जाग्रत हो। जिससे उसको कुछ खाने की इच्छा हो। इस प्रकार योग के बारे में, ज्ञान के बारे में अलग-अलग समय पर उनकी अलग-अलग उपमायें बाबा ने दी हैं। उनके अलग-अलग विश्लेषण और विवरण दिये हैं। उन सबको याद रखना ज़रूरी है। ज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो यह हमारा ईश्वरीय विश्वविद्यालय सारे विश्व का आध्यात्मिक विश्वविद्यालय है। जहाँ आध्यात्मिक उच्च शिक्षा प्राप्त होती है, कायदेसिर, सुसम्बद्ध रूप से और इस शिक्षा से उच्च प्राप्ति होती है। यह तो यूनिवर्सिटी है जहाँ 'यूनिवर्सल नॉलेज' मिलता है। तो बाबा ने योग को हमारे लिए इतना सहज कर दिया कि योग न कहो, याद कहो। याद करना मनुष्य के लिए सहज है। तो बाबा ने ज्ञान, योग से सम्बंधित जो भी बातें कही हैं उनको अर्थ सहित, यथार्थ रूप में जानना भी, समझना भी और उसका स्वरूप भी बनना है।

मुम्बई-सांताक्रूज़। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भुजबल नॉलेज सिटी,एमईटी लीग ऑफ कॉलेजेस ऑडिटोरियम,बांद्रा मुम्बई में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन ने 'पॉवर ऑफ फेथ एंड ब्लेसिंग्स' विषय पर सभा में उपस्थित 800 से अधिक लोगों को सम्बोधित किया। इस मौके पर ब्र.कु. मीरा दीदी,सांताक्रूज़ सबज़ोन इंचार्ज, ब्र.कु. कमलेश बहन,सांताक्रूज़ ईस्ट सेंटर इंचार्ज, पंकज भुजबल,एमएलए एंड ट्रस्टी ऑफ द एमईटी इंस्टीट्यूट, रेनू हंसराज,कॉर्पोरेटर,जुहू, मोहन चंदावर्कर,एमडी-एफडीसी, डीसीपी गजानन जी, अशोक मोहनानी, प्रकाश कोठारी,ट्रस्टी ऑफ केईएस,महावीर हॉस्पिटल,सोमानी फैमिली तथा एक्ट्रेस ईरा दुबे सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।

इंदौर-वेंकटेश नगर(म.प्र.)। शिवदर्शन झाँकी के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में इंदौर क्षेत्र क्र.1 के विधायक संजय शुक्ला, कांग्रेस नेता मंजीत टुटेजा, समाजसेवी संतोष वाधवानी, राजेंद्र मित्तल, राजू गुप्ता, ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. सुजाता बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा अन्य।

सूरतगढ़-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. स्वाति सारस्वत, नशा मुक्ति आंदोलन की अध्यक्षा पूजा छाबड़ा, इनरव्हील क्लब की अध्यक्ष परविन्दर कौर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी बहन एवं नारी उत्थान केन्द्र की अध्यक्षा राजेश बहन।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर माउण्ट लिटरा जी स्कूल में आयोजित सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी को सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में विभिन्न योगदानों के लिए सम्मानित करते हुए प्रसिद्ध चिकित्सक एवं आईएमए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अभिजीत रायजादा एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. श्रीकान्त गिरि। इस अवसर पर स्कूल के डायरेक्टर डॉ. विनोद तिवारी, डॉ. संजना तिवारी, प्राचार्य शुभदा जोगलेकर एवं स्कूल के अन्य शिक्षकगण उपस्थित रहे।

भोपाल-विवेकानंद कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर 'स्वराज्य से स्वर्णिम भारत का निर्माण' विषयक कार्यक्रम में सभी मंदिरों के पंडित एवं आचार्यों को सम्मानित कर माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया गया। इस मौके पर राजयोगिनी ब्र.कु. मणि बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

नामली-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'खुशहाल महिला-खुशहाल परिवार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. संगीता बहन।

गांधीनगर से.28-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में दर्द से पीड़ित मरीज़ों के लिए पेन स्पेशलिस्ट एम.डी. डॉ. राजीव हर्षे द्वारा तीन निःशुल्क एक्यूपंचर सीरिज़ कैम्प का आयोजन हुआ। इस दौरान 87 ब्र.कु. भाई-बहनों को एक्यूपंचर द्वारा दर्द से राहत मिली। इस मौके पर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी एवं अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

जबलपुर-रांझी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव शक्ति भवन सेवाकेन्द्र में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के पुण्य स्मृति दिवस पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. साधना बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

राजनांदगांव-छ.ग.। विप्र फाउण्डेशन, लायंस क्लब एवं अधिवक्ता संघ की ओर से सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन को शॉल श्रीफल एवं मोतियों की माला से सम्मानित करते हुए शारदा तिवारी, प्रकाश चंद सांखला एवं राजकुमारी शर्मा।